शैक्षिक सत्र–2025–26
सामान्य आधारिक विषय–कक्षा–11 (व्यावसायिक वर्ग)
(पर्यावरणीय शिक्षा एवं ग्रामीण विकास)
(कक्षा–11)

परिचय–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 के अनुसार+2 स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत् हैं–

1–शिक्षा की विविध धाराओं के अध्ययन का अवसर उपलब्ध कराना जिससे कि स्वरोजगार को बढ़ाया जा सके।

2–तकनीकी जनशक्ति की मांग और आपूर्ति के असंतुलन को कम करना।

3–लक्ष्यविहीन उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को एक विकल्प प्रदान करना।

सारांश में उपर्युक्त उद्देश्यों पर आधारित व्यावसायिक शिक्षा से यह अपेक्षा की जाती है कि वह समाज में ऐसे व्यक्तियों का निर्माण कर सकेगी, जिनके पास अपने स्वयं के विकास के विस्तृत ज्ञान का स्रोत एवं प्रशिक्षण होगा, युवा शक्ति को लाभकारी रोजगार देकर उनमें निरुत्साह की भावना को समाप्त करने अथवा कम करने में सहयोगी हो सकेगी, उद्यमिता के प्रति एक स्वस्थ भावना का विकास, आत्मविश्वास तथा व्यावसायिक जागरूकता उत्पन्न कर सकेगी।

स्थूल रूप से व्यावसायिक शिक्षा केवल किसी एक व्यवसाय (ट्रेड) छात्रों में रुचि उत्पन्न कर ज्ञान बोध एवं कौशल प्राप्त करने की ओर ही नहीं आकर्षित करती है, वरन् इसके अतिरिक्त निम्नलिखित उद्देश्यों की भी शिक्षा प्रदान करती है–

1–वातावरण तथा वातावरण के विकास के प्रति जागरूकता।

2–वैज्ञानिक तथा तकनीकी परिवर्तनों के कारण वातावरण में होने वाले परिवर्तन के प्रति पहले से जानकारी होना।

3–अपने समाज की आवश्यकता तथा विकास के परिप्रेक्ष्य में व्यावसायिक शिक्षा जीवनपर्यन्त शिक्षा तंत्र के एक अंश के रूप में समझना।

व्यावसायिक शिक्षा छात्रों को वेतनभोगी अथवा स्वरोजगार दो प्रकार के व्यवसायों के लिये तैयार करती है किन्तु उनमें से अधिकांश छात्र स्वरोजगार हेतु अपने स्वयं के प्रतिष्ठानों को स्थापित करने में आवश्यक आत्मविश्वास की कमी रखते हैं, जबकि इसे स्वीकार किया जाना चाहिये कि आगामी आने वाले वर्षों के कुछ सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं का समाधान ढूढ़ने में स्वरोजगार की एक आवश्यक भूमिका होगी। अतः यह आवश्यक है कि व्यावसायिक शिक्षा को उद्यमिता विकास कार्यक्रमों द्वारा स्वरोजगार से जोड़ा जाये।

आज की शिक्षण संस्थायें तथा समाजसेवी संस्थाओं का प्रमुख उद्देश्य छात्रों को वेतनभोगी रोजगार के लिये तैयार करना है जिसके फलस्वरूप छात्रों में रचनात्मक; Creativity) लगन; Perseverance) स्वतंत्रता (Independence)] अन्तःदृष्टि (Visions) एवं नव–निर्माण की प्रवृत्ति (Innovativeness) जो उद्यमिता विकास के प्रमुख लक्षण हैं, उनको प्रोत्साहन नहीं मिल पाता है, जबकि व्यावसायिक शिक्षा का उद्देश्य छात्रों द्वारा अपने व्यवसाय (ट्रेड) से सम्बन्धित उद्यमिता के अवसरों का आभास करना, स्वरोजगार के क्रिया–कलापों की व्यवस्था करना तथा अपने प्रतिष्ठानों को प्रभावी व्यवस्था करने में प्रशिक्षण दिया जाना है। उद्यमिता विकास के कार्यक्रमों के विशिष्ट रूप निम्नवत् हैं–

(1) छात्रों में वेतनभोगी रोजगार के अतिरिक्त विकल्प के रूप में उद्यमिता (स्वरोजगार) की अनुभूति एवं कल्पना करने की क्षमता का विकास करना।

(2) उद्यमिता (स्वरोजगार) प्रारम्भ करने हेतु प्रोत्साहित होकर उनमें भावना तथा क्षमतायें विकसित करना जो स्वरोजगार भविष्य को प्रारम्भ करने तथा उसकी स्थापना करने के लिये आवश्यक है।

(3) उद्यमिता (स्वरोजगार) के अवसरों को खोज करने के लिये अन्तर्दृष्टि का विकास करना।

4–उद्यम सम्बन्धी (स्वरोजगार), साहस को संगठित करने तथा उसे सफलतापूर्वक चलाने हेतु छात्रों में क्षमता का विकास करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुये व्यावसायिक शिक्षा पढ़ने वाले छात्रों के लिये सामान्य आधारिक विषय के अन्तर्गत निम्नलिखित दो प्रमुख घटकों को रखा गया है–

(1) वातावरणीय शिक्षा तथा ग्रामीण विकास।

(2) उद्यमिता का विकास।

सामान्य आधारिक विषय हेतु निर्धारित 15 प्रतिशत समय में से 5 प्रतिशत समय वातावरणीय शिक्षा तथा ग्रामीण विकास हेतु तथा 15 प्रतिशत समय उद्यमिता के विकास हेतु निर्धारित किया गया है। इनके पाठ्यक्रमों का विस्तार आगे किया जा रहा है।

सामान्य आधारिक विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न–पत्र तीन घंटे का होंगा।

खण्ड–क (50 अंक)

(पर्यावरणीय शिक्षा एवं ग्रामीण विकास)

(1) पर्यावरणीय शिक्षा–

(1) पर्यावरणीय संसाधन (शक्ति/ऊर्जा, वायु, जल, मिट्टी, खनिज, पौध तथा जन्तु) निहित क्षमता, सन्दोहन के प्रभाव। 8 अंक

(2) संसाधनों और संख्या के मध्य जनसंख्या विस्फोट और असामंजस्य, आधारभूत मानव आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षा उद्देश्यों की अभिलाषा को प्राप्त करने हेतु पर्यावरण की मांग और पर्यावरण पर इसका प्रभाव। 8 अंक

(3) औद्योगीकरण का पर्यावरण पर प्रभाव– 4 अंक

(क) प्राकृतिक दृश्य का अनुत्क्रमणीय परिवर्तन।

(ख) पर्यावरण का अतिक्रमण/अवक्रमण और इनके प्रभाव।

(4) आधुनिक कृषि का पर्यावरण पर प्रभाव– 8 अंक

क–अधिक उपज प्रदान करने वाली किस्मों का प्रयोग एवं अनुवांशिक स्रोतों से वंचित करना।

ख–नहर द्वारा सिंचाई और जलाक्रांति (वाटर लागिंग)।

ग–उर्वरकों एवं कीटनाशकों का प्रयोग और पर्यावरण पर इसके प्रभाव।

घ–कीटनाशकों के उत्पादन, भण्डारण, प्रेषण एवं निस्तारण में जोखिम उठाना।

(5) भूमि प्रयोग, मृदा अवक्रमण, जनसंख्या दबाव और वनों की क्षीणता, घास के मैदान एवं फसल के खेत। 4 अंक

(6) जलवायु और मृदा का पर्यावरणीय प्रदूषण और जीवित संसार पर इसके प्रभाव। 2 अंक

(7) खतरनाक औद्योगिक एवं कृषि उत्पाद– 2 अंक

7.1–उनके प्रयोग से सम्बन्धित सुरक्षा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धित आपदायें।

7.2–प्रयोग करने का पर्यावरण पर प्रभाव।

(8) चिकित्सीय तकनीकी का दुरुपयोग एवं दवाओं के दुरुपयोग। 2 अंक

(9) सामग्रियों के गुण (जैव अवक्रमण और अवक्रमण रहित)। 2 अंक

(2) ग्रामीण विकास–

(1) भारतवर्ष में भूमि उपयोग के पार्श्वदृश्य (चित्रण)। 2 अंक

(2) आर्थिक पिछड़ेपन के कारण, गरीबी ग्रस्त क्षेत्र। 2 अंक

(3) निवेशों (इनपुट) को सुधार कर कृषि उत्पादकता बढ़ाने के उपाय। 2 अंक

(4) वनारोपण–वन लगाना, सामाजिक एवं फार्म वानकी पर्यावरणीय सामाजिक और आर्थिक वृद्धि। 2 अंक

(5) ग्रामीण कूड़े–कचरे का पुनः उपयोग जैसे गोबर गैस संयंत्र, कम्पोस्ट खाद का निर्माण। 2 अंक

खण्ड–ख

(50 अंक)

उद्यमिता विकास

1–व्यवसाय में उद्यमिता का बोध कराना– 8 अंक

1–व्यवसाय (कैरियर कन्वास) सम्बन्धी सामान्य चर्चा, उसके विद्यालय एवं चुने हुये व्यवसाय की अनिवार्यता।

2–व्यावसायिक धारा के अन्तर्गत वैकल्पिक जीविकोपार्जन के साधन तथा वेतनभोगी एवं स्व रोजगार।

3–उद्यमिता की गतिशीलता–

(1) व्यवसाय में उद्यम का महत्व एवं उपादेयता।

(2) उद्यमिता की विशेषतायें/महत्व/कार्य एवं प्रतिफल (पुरस्कार)।

(4) भारतीय संस्कृति में उद्यमिता, भारतीय संस्कृति का स्वरूप–

(1) उद्यमिता का महत्व तथा स्वरूप, भारतीय संस्कृति में उद्यमिता का महत्व तथा स्वरूप।

(2) उत्पाद तथा उपयोगी अवधारणा।

(3) सादा जीवन एवं उच्च विचार तद्नुसार आचरण।

2–उद्यमिता के मूल्य– 4 अंक

(1) मूल्य एवं मानव व्यवहार से सम्बन्धित मूल्यों का बोध कराना।

(2) उद्यमिता में मूल्यों का बोध–

(1) नवीन स्थिति।

(2) स्वतंत्रता।

(3) समुन्नत प्रदर्शन।

(4) कार्य के प्रति निष्ठा।

(3) उद्यमिता सम्बन्धी मूल्यों के क्रिया–कलापों को परिचित कराना।

3–विभिन्न प्रकार के उद्यमिता सम्बन्धी प्रवृत्तियों की धारणायें एवं उनकी सार्थकता– 6 अंक

1–कल्पना शक्ति/अन्तर्ज्ञान का प्रयोग।

2–सामान्य जोखिम उठाना।

3–अभिव्यक्ति एवं कार्य की स्वतंत्रता का लाभ उठाना।

4—आर्थिक अवसरों को खोजना।
5—सफलतापूर्वक पूरे किये गये कार्यों से संतुष्टि प्राप्त करना।
6—विश्वास करना कि ये पर्यावरण को परिवर्तित कर सकते हैं।
7—पहल करना।
8—स्थिति का विश्लेषण करना एवं कार्य योजना बनाना।
9—कार्य में लगे रहना।
10—क्रिया—कलाप।

4—व्यावहारिक क्षमतायें— 6 अंक

1—नवीन स्थिति से अवगत होना एवं जोखिम उठाना।
2—संदिग्धताओं को सहने की क्षमता।
3—समस्या—समाधान।
4—लगनशीलता।
5—स्तर/कार्य प्रदर्शन की गुणवत्ता।
6—सूचनाओं को प्राप्त करना।
7—व्यवस्थित योजना।
8—क्रिया—कलाप।

5—उद्यमिता अभिप्रेरणा— 8 अंक

1—स्वयं के बारे में आंकड़े एकत्रित करना।
2—उद्यमिता के व्यवस्था एवं अभिप्रेरणा के ढंग/तरीकों से परिचित कराना।
(1) उद्यमिता सम्बन्धी कौशल एवं व्यवहार का प्रत्यावाद/ज्ञान देना।
3—जोखिम उठाने की क्षमता, सफलता की आशा एवं असफलता का भय।
(1) पश्च—पोषण से सीखना।
4—समझाने की अभिप्रेरणा शक्ति, उपलब्धि, कल्पनायें, अभिप्रेरणा की प्रगाढ़ता, उपलब्धि, भाषा आदि।
5—व्यक्तिगत कार्यक्षमता—
(1) व्यक्तिगत जीवन का लक्ष्य।
(2) उद्यमिता से इसका सम्बन्ध।
(3) नियंत्रण के स्थान (बिन्दु)।
6—उद्यमिता के मूल्यों पर प्रत्यावाद करना (का ज्ञान देना)।
7—उपलब्धि योजना।
8—कार्य क्षमता पर प्रभाव।
9—उद्यमिता सम्बन्धी लक्ष्यों को निर्धारित करना—
(1) उद्यमिता के उद्देश्य की सहभागिता।
(2) उद्यमिता स्थापित करने हेतु उचित तरीकों का विकास।
(3) कठिनाइयों का सामना करना।
(4) सहायता प्राप्त करने की क्षमता में पुनर्बलन का विकास।
10—सृजनात्मकता।
11—समस्याओं का सामना करने की योग्यता को समझना एवं व्यवहार में लाना।

6—उद्यम चलाने की क्षमता— 8 अंक

1—परियोजना का निर्धारण—
1.1—बड़े पैमाने के उद्योग, मध्यमवर्गीय पैमाने के उद्योग एवं छोटे पैमाने के लिये उद्योग, लघु क्षेत्र, कुटीर उद्योग एवं ग्रामीण उद्योग की परिभाषायें।
1.2—परियोजनाओं का वर्गीकरण, निर्माण, कार्य सेवा, व्यापार करना, उपभोक्ता वस्तुयें, पूंजीगत वस्तु, सहायक वस्तु, प्रत्येक प्रकार के कार्यों का क्षेत्र एवं उनकी विशेषतायें।
2—केन्द्रीय एवं राज्य सरकार की नीतियां, एस0 एस0 आई0 लघु क्षेत्र और नये उद्यमों के लिये कार्यक्रम एवं प्रोत्साहन।
3—उद्योग धन्धे स्थापित करने के चरण।
4—वर्तमान एवं भावी उद्योग धन्धों की सहायता प्रदान करने वाली संस्थाओं के सम्बन्ध में जानकारी—
4.1—डी0 आई0 सी0।
4.2—उद्योग निदेशालय।
4.3—तकनीकी सलाहकारों का संगठन।
4.4—एस0 एफ0 सी0।
4.5—एस0 एस0 आई0 डी0 सी0।
4.6—आई0 डी0 सी0।
4.7—एस0 एस0 आई0 सी0।

4.8—एस0 आई0 एस0 आई0।
4.9—व्यापारी बैंक।
4.10—सहकारी बैंक।
4.11—के0 बी0 आई0 सी0 इत्यादि।

5—एस0 एस0 आई0 के क्षेत्र में अनन्य उत्पादन हेतु उत्पादित वस्तुओं का आरक्षण।
विद्यार्थियों को उत्पादित वस्तुओं की सूची बांट देनी चाहिये।

7—विपणन (बाजार) की स्थिति का पता लगाना— 4 अंक

1—विपणन (बाजार) की स्थिति ज्ञात करने की आवश्यकता एवं महत्व।
2—बाजार की स्थिति का पता लगाने के घटक एवं तकनीक—
2.1—उत्पाद की प्रकृति।
2.2—मांग विश्लेषण और उपभोक्ता की आवश्कयताओं का पता लगाना।
2.3—पूर्ति विश्लेषण और बाजार की स्थितियां।
2.4—विपणन का अभ्यास, भण्डारण वितरण पैकिंग, साख नीति प्रेषण, व्यक्तिगत विपणन कला का चयन करना।
3—बाजार को समझना, बाजार का विभक्तीकरण, उत्पाद विश्लेषण।
4—उत्पाद का चयन करना और चयनित उत्पाद हेतु बाजार का सर्वेक्षण करना।

8—परियोजना का चयन— 6 अंक

1—परियोजना की पहचान के लिये पहचान हेतु विचार—विमर्श।
2—दिये गये विचारों के संक्षिप्तीकरण की प्रक्रिया।
3—उत्पादन के अन्तिम चुनाव के कारकों पर विचार करना, मांग प्रतियोगी उत्पादन के कारकों की उपलब्धियां, सरकारी नीति, सीमान्त लाभ इत्यादि।
4—क—शक्तियों, कमजोरियों, अवसरों एवं प्रशिक्षण का विश्लेषण—
4—क—1—शक्तियां और कमजोरियां।
4—क—2—व्यक्तिगत शक्तियों और कमजोरियों का मूल्यांकन।
4—क—3—मुद्रा।
4—क—4—बाजार।
4—क—5—तकनीकी ज्ञान की जानकारी।
4—ख—1—श्रम, सामग्री एवं क्षमतायें।
4—ख—2—अवसर एवं प्रशिक्षण।
4—ख—3—आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय पहलुओं की स्थिति के अध्ययन द्वारा प्रशिक्षण को पूर्ण करना एवं पर्यावरणीय छानबीन करना।